प्रमाण पत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ, कि श्रीमती चंद्रलेखा चंद्रशेखर चव्हाण, ने मेरे निर्देशन में ' लक्ष्मीनारायण लाल के प्रतीक नाटक ' लघु-शोध-प्रबन्ध , शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्.उपाधि के हेतु लिखा है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। मैं संपूर्ण लघु-शोध-प्रबन्ध को आद्योपान्त पढकर ही यह प्रमाणपत्र दे रहा हूँ।

(डॉ.व्यं.वि. द्रविड)
शोध निर्देशक

कोल्हापुर।
१४ मई, १९९०।

••

कृतज्ञता

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लेखन में मुझे जिनसे सहयोग मिला, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ। सर्वप्रथम तो मैं उन समस्त लेखकों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिनकी रचनाओं का उपयोग मैंने सहायक ग्रंथों के रूप में किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का कार्य, अनेक मान्यवर व्यक्तियों की शुभकामनाओं और शुभाशिषों का फल है। मैं इन सबकी हृदय से आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के लेखन-कार्य के लिए श्रध्देय डॉ.व्यं.वि. द्रविड जी जैसे विद्वान गुरुवर मुझे निर्देशक के रूप में मिले, इसे मैं अपना अहोभाग्य मानती हूँ। कहते हैं ' गुरु बिन कौन दिखावे बाट।' सचमुच, डॉ. द्रविड जी ने मुझे मौलिक मार्गदर्शन किया। उनके अनमोल मार्गदर्शन के बिना यह शोध-कार्य कदापि संपन्न न हो सकता। अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी उन्होंने निर्देशक के रूप में मुझ पर जो ऋण किये हैं, उससे उऋण हो पाना असंभव है। अत: उनके प्रति मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ।

मेरे महाविद्यालय के विभाग प्रमुख प्रा.वेदपाठक जी ने मुझे समय-समय पर प्रोत्साहन दिया, तथा लेखन-सामग्री देने में मेरी मदद भी की। प्रा.रजनी भागवत जी ने अपनी किताबें देकर मेरी बहुत बडी सहायता की। अत: मुझे कठिनाइयाँ महसूस नहीं हुई। आप की इस कृपा का एहसास मुझे हमेशा रहेगा। आदरणीय डॉ.व्ही.के.मोरे, प्रा.एस.बी.कणबरकर, प्रा.तिवले, प्रा.शहा जी का स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद मेरे साथ रहा है, उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करती हूँ।

इन सबके साथ मुझे इस शोध-प्रबन्ध के लेखन कार्य में प्रेरणा प्रदान करने वालों में मेरे पति श्री. चंद्रशेखर चव्हाण, तथा मेरे परिवार के अन्य लोग भी हैं।

मेरे पति ने न केवल मुझे निरंतर प्रोत्साहन ही दिया, अपितु समय-असमय मुझे सहकार्य भी किया। उनके प्रति मैं शब्दों में आभार प्रकट नहीं कर सकती।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति, मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से, न्यू महाविद्यालय के तथा शहाजी महाविद्यालय के ग्रंथालय से हुई। न्यू महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री.पी.सी.पाटील जी ने तो मेरी अनमोल सहायता की है। इन ग्रंथालयों के पदाधिकारियों के प्रति मैं आभार प्रदर्शित करती हूँ।

अंत में शोध-प्रबंध को अतिशीघ्र एवं सुचारु रूप से टंकलिखित रूप देने का काम श्रीयुत बाळासाहेब रा.सावन्त, कोल्हापुर जी ने आत्मीयता किया। प्रबन्ध को जिल्दसाज चढाने का काम पौर्णिमा मुद्रणालय के श्री. पांडुरंग शिन्दे ने अपनापन से किया। उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ।

ccchavan

कोल्हापुर। सौ.चंद्रलेखा चंद्रशेखर चव्हाण।

दिनांक :१४:५:१९९०।

••

अनुक्रमणिका

भूमिका 1

१) प्रथम अध्याय :

प्रतीक शब्द का अर्थ, परिभाषा-भारतीय एवं पाश्चात्य -

अ) प्रतीक शब्द का अर्थ

ब) प्रतीक की परिभाषा

क) प्रतीक की महत्व-प्रतिष्ठा

२) द्वितीय अध्याय : 23

प्रतीक नाटक का स्वरुप-हिन्दी में प्रतीक नाटकों का उद्गम, वर्गीकरण --

अ) प्रतीक का उद्भव

ब) प्रतीक नाटक की परिभाषा

क) हिंदी-नाट्य-साहित्य में प्रतीक नाटकों का अभ्युदय

ड) नाटकीय तत्वों की दृष्टि से प्रतीक नाटक

इ) प्रतीक नाटकों का वर्गीकरण

३) तृतीय अध्याय - 39

हिन्दी के प्रतीक नाटकों के संक्षिप्त विकास की रूपरेखा

अ) भारतेंदु पूर्व परंपरा के प्रतीक नाटक

ब) भारतेंदु युगीन प्रतीक नाटक

क) प्रसाद युगीन प्रतीक नाटक

ड) प्रसादोत्तर काल के प्रतीक नाटक

इ) छठे दशक के प्रतीक नाटक

४) चतुर्थ अध्याय : 52

सातवें दशक तथा परवर्ती प्रतीक नाटक

५) पंचम अध्याय : 69

लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में प्रतीकात्मकता

अ) अन्धा कुआँ (सन् १९५५)

ब) मादा कैक्टस (सन् १९५९)

क) सूखा सरोवर (सन् १९६०)

ड) रक्त कमल (सन् १९६२)

इ) रातरानी (सन् १९६२)

फ) सुंदर रस (सन् १९६२)

ग) दर्पन (सन १९६४)

च) सूर्यमुख (सन् १९६८)

छ) मिस्टर अभिमन्यु (सन् १९७१)

ज) कर्फ्यू (सन् १९७२)

६) षष्ठ अध्याय : 112

प्रतीक नाटकों की मंचीयता

७) सप्तम अध्याय : 136

उ प सं हा र

८) सं द र्भ ग्रं थ सू ची 140

..

भूमिका

भूमिका

एम्.ए. की पढाई के दौरान मुझे डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल जी के नाटक पढने का मौका मिला। उनका 'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक पाठ्यक्रम में था, अत: मैंने उस नाटक का, गहराई से अध्ययन किया था। नाटक पढकर मैं उनकी ओर आकर्षित हो गयी। सन १९८१ में डॉ.लाल स्वयं, शिवाजी विश्वविद्यालय में आये थे। उस वक्त उनसे मुलाकात हुई थी। उनके विचारों से मैं बहुत प्रभावित हो गयी थी। और तभी मैंने फैसला किया था कि डॉ. लाल के नाटकों पर जरूर कुछ शोध कार्य करूँगी।

मैंने उनके और भी कुछ नाटक पढे तो मुझे पता चला कि उनके बहुत से नाटक प्रतीकात्मक हैं। उन्होंने अपने नाटकों में काफी मात्रा में प्रतीकों का प्रयोग किया है। फलस्वरूप मेरे मन में, उनके प्रतीक नाटकों पर शोध कार्य करने की इच्छा जाग्रत हो गयी। अत: एम्.फिल्. के लघु-शोध प्रबन्ध के लिए मैंने यह विषय चुन लिया।

प्रस्तुत प्रबन्ध 'लक्ष्मीनारायण लाल के प्रतीक नाटक' में डॉ. लाल के नाटकों का अनुशीलन 'प्रतीकात्मकता' के संदर्भ में किया गया है। प्रबन्ध के प्रारंभ में कुछ प्रश्न मन में उठ खडे हुए थे। वे प्रश्न थे --

(१) प्रतीक का अर्थ और स्वरूप क्या है ?

(२) प्रतीक नाटकों का विकास किस प्रकार हो गया है ?

(३) डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में कौन कौन से प्रतीक पाये जाते हैं ?

(४) प्रतीक नाटकों को किस प्रकार मंचित किया जाता है ?

इन प्रश्नों का हल ढूँढने के लिए मैंने, डॉ.लाल के नाटकों में प्रतीकात्मकता का अनुशीलन करने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में 'प्रतीक' के स्वरूप का विवेचन किया गया है। इस अध्याय में प्रतीक शब्द का अर्थ, परिभाषा और महत्व के बारे में चर्चा की है।

द्वितीय अध्याय में प्रतीक का उद्भव, प्रतीक नाटक का स्वरूप, हिंदी नाट्य साहित्य में प्रतीक नाटकों का अभ्युदय, नाटकीय तत्वों की दृष्टि से प्रतीक नाटक और प्रतीक नाटकों का वर्गीकरण आदि विषयों का विवेचन किया गया है।

तृतीय अध्याय का विषय प्रतीक नाटकों के विकास को लेकर है। इसमें प्रतीक नाटकों का संक्षिप्त परिचय देते हुए कालक्रम के अनुसार उनके बदलते स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय में सातवें दशक के तथा परवर्ती काल के प्रतीक नाटकों की चर्चा की है।

पंचम अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के प्रतीक नाटकों का विस्तृत विवेचन किया है। इसमें कुल मिलाकर दस नाटकों की प्रतीकात्मकता पर प्रकाश डाला है।

छठे अध्याय में इन प्रतीक नाटकों की मंचीयता स्पष्ट की है।

सप्तम अध्याय उपसंहार का है। इसमें पूरे शोध-प्रबन्ध के बारे में जो निष्कर्ष प्राप्त हुए, उनका विवरण दिया है। यह प्रबन्ध के विषय का सार रूप है।

प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

••